

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद - आठ भेद

- ① → विधानार्थक वाक्य
- ② → निषेध वाचक "
- ③ → प्रश्नवाचक "
- ④ → इच्छार्थक "
- ⑤ → आज्ञार्थक "
- ⑥ → संकेतवाचक "
- ⑦ → संदेहार्थक "
- ⑧ → विस्मयवाचक "

① विधानार्थक वाक्य—

जब किसी वाक्य का अर्थ सामान्य रूप से ही समझ लिया जाता है अर्थात् जैसा सुना जाए वैसे ही आसानी से ग्रहण कर लिया जाए, विधानार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे— बच्चा सो रहा है। मोहन पढ़ रहा है।
वह जा रहा था। मैं खाना खा रहा हूँ।

② निषेधवाचक/नकारात्मक वाक्य -

जिस वाक्य में किसी कार्य के होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक/नकारात्मक वाक्य कहते हैं।

जैसे- वह आज नहीं जाएगा। सीता आज नहीं आएगी।
वह नहीं खाएगा। उसे मन बुझाओ।

③ प्रश्नवाचक वाक्य -

जिस वाक्य में किसी प्रत्यक्ष प्रश्न के होने का बोध हो प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है।

जैसे -

तुम्हारा क्या नाम है? आप कहाँ रहते हो?

आप जोधपुर कब आओगे? आप पढ़ाई क्यों नहीं कर रहे?

④ इच्छार्थक वाक्य-

जिस वाक्य में आशा, शुभकामना या इच्छा के अर्थ का बोध होता है, इच्छार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे- भगवान् करे, आप सफल हो जाएं।
 मेरी इच्छा है कि आप हमेशा आगे बढ़ते रहें।
 आप हमेशा खुश रहो। मुझे आशा है कि आप जरूर जी लेंगे।

⑤ आज्ञार्थक वाक्य -

जिस वाक्य में आदेश, आज्ञा, अनुमति और उपदेश इत्यादि के अर्थ का बोध होता है, आज्ञार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे - तुम बाहर बँगो। यहाँ से निकलो।
 तुम बैठकर पढ़ो। सबसे प्रेम करो। अब सो जाओ।
 मुझे एक पुस्तक दो। उसे यहाँ बुटाओ।

⑥ संकेतवाचक वाक्य—

जिस वाक्य में किसी संकेत के अर्थ का बोध हो, संकेतवाचक वाक्य कहलाता है।

जैसे— अगर वह आज नहीं आया तो मैं समझूँगा कि वह मेरे लिए मर गया। उसे रोकना नहीं तो मैं मार दूँगा। या तो पोर दो नहीं तो परिणाम भुगतना।

⑦ संदेहार्थक वाक्य -

जिस वाक्य में संदेह या संभावना के अर्थ का बोध हो, संदेहार्थक वाक्य कहलाता है।

जैसे- ऐसा लगता है जैसे कोई आया हो।

मुझे उसके कार्य में शंका है। शायद वह गया हो।

बादल घने काले हो रहे हैं, शायद बरसात हो।

हो सकता है, मैं कल नहीं आ पाऊँ।

⑧ विस्मयबोधकवाक्य-

जिस वाक्य में विस्मय के

अर्थ का बोध हो अर्थात् दृष्ट, शोक, दृष्टा, विस्मय
इत्यादि के अर्थ से युक्त वाक्य, विस्मयबोधकवाक्य
कहलाता है।

जैसे- अरे! तुम कब आर? ओहो! मजा आ गया।
वाह! क्या स्वाद है। हे भगवान! बहुत बुरा हुआ।